धौवचक (धौचक/धौवचक) गोत्र : उत्पत्ति, व्युत्पत्ति एवं ऐतिहासिक परंपरा का एक अध्ययन



सार

भारतीय समाज में गोत्र केवल वंश की पहचान नहीं है, बल्कि वह सामाजिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक स्मृति का भी वाहक है। कश्यप राजपूत समाज का धौवचक (धौचक) गोत्र भी ऐसी ही एक प्राचीन परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में धौवचक गोत्र की उत्पत्ति का अध्ययन संस्कृत व्युत्पत्ति, पौराणिक परंपरा, पारिवारिक वंशावलियों तथा औपनिवेशिक अभिलेखों के आधार पर किया गया है। साथ ही यह भी स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि समय-समय पर प्रशासनिक

वर्गीकरण और समुदाय की पारंपरिक वंश-मान्यताओं में किस प्रकार अंतर दिखाई देता है।

मुख्य शब्द: धौवचक, धनुषक, कश्यप राजपूत, तक्षक, घरुक, धारुक, कहार, पांडव वंश, पृथ्वीराज चौहान।

सोनू धौचक कश्यप राजपूत (करण), हरियाणा

✍️ लेखक परिचय

स्वतंत्र लेखक | शोधकर्ता | समाजसेवी

सोनू धौचक कश्यप राजपूत समाज के इतिहास, संस्कृति, वंशावली, सामाजिक गतिविधियों, युवा जागरूकता, शिक्षा, संगठनात्मक विकास एवं समसामयिक विषयों पर निरंतर अध्ययन, शोध एवं लेखन कार्य में सक्रिय हैं।

---

1. प्रस्तावना

भारत की जातीय एवं गोत्रीय परंपराएँ अत्यंत प्राचीन हैं। अनेक गोत्रों का इतिहास केवल राजकीय अभिलेखों में ही नहीं, बल्कि लोक परंपराओं, वंशावलियों तथा धार्मिक ग्रंथों में भी सुरक्षित है। धौवचक (धौचक) गोत्र ऐसा ही एक गोत्र है, जिसकी ऐतिहासिक परंपरा विभिन्न स्रोतों में बिखरी हुई दिखाई देती है।

इस शोध का उद्देश्य धौवचक गोत्र की उत्पत्ति, उसके नाम की व्युत्पत्ति तथा उसके ऐतिहासिक विकास का तुलनात्मक अध्ययन करना है।

---

2. शोध पद्धति

इस शोध में निम्नलिखित स्रोतों का उपयोग किया गया है—

1. संस्कृत शब्दकोश एवं व्याकरण।
2. पुराण एवं पौराणिक साहित्य।
3. कश्यप राजपूत समाज की वंशावलियाँ।
4. "क्षत्रिय वंश प्रदीप"।
5. 1911 ई. की "धरुका क्षत्रिय वंशावली"।
6. ब्रिटिशकालीन जनगणना एवं प्रशासनिक रिपोर्टें।

---

3. धौवचक शब्द की व्युत्पत्ति

संस्कृत में **"धानुष्क (धनुषक)"** शब्द का अर्थ है—धनुष धारण करने वाला, धनुर्धर अथवा धनुष से जीविका चलाने वाला योद्धा। संस्कृत कोशों में **धानुष्क (Dhānuṣka)** का अर्थ "Archer" या "Bowman" दिया गया है। ([Wisdom Library][1])

भाषावैज्ञानिक दृष्टि से संस्कृत से प्राकृत एवं अपभ्रंश में अनेक शब्दों के रूप परिवर्तित हुए। समुदाय की परंपरा के अनुसार ध्वन्यात्मक परिवर्तन की निम्न श्रृंखला प्रस्तावित की जाती है—

धनुषक → धनुचक → धनौचक → धौचक → धौवचक

यह व्युत्पत्ति समुदाय की पारंपरिक मान्यता पर आधारित है। वर्तमान में इस विशिष्ट शब्द-विकास को सिद्ध करने वाला स्वतंत्र भाषावैज्ञानिक अध्ययन उपलब्ध नहीं है, इसलिए इसे एक संभावित व्युत्पत्ति के रूप में देखा जाना चाहिए।

---

4. तक्षक वंश से संबंध

पुराणों के अनुसार महर्षि कश्यप अनेक वंशों के आदिपुरुष माने जाते हैं। उन्हीं की संतानों में **तक्षक** का भी उल्लेख मिलता है।

कश्यप राजपूत समाज की वंशावलियों के अनुसार धौवचक गोत्र के पूर्वज तक्षकवंशी क्षत्रिय थे। इसी आधार पर यह गोत्र स्वयं को कश्यप ऋषि की तक्षक परंपरा से जोड़ता है।

---

5. पृथ्वीराज चौहान की सेना में धौवचक पूर्वज

कश्यप राजपूत समाज की प्रकाशित वंशावलियों में उल्लेख मिलता है कि धौवचक गोत्र के पूर्वज **कामधवचक** सम्राट पृथ्वीराज चौहान की सेना में प्रमुख योद्धा थे। इन वंशावलियों में उन्हें तक्षकवंशी क्षत्रिय बताया गया है।

यद्यपि इस विवरण की पुष्टि करने वाले समकालीन अभिलेख सीमित हैं, तथापि यह समुदाय की ऐतिहासिक स्मृति का महत्वपूर्ण अंग है।

---

6. धारुक (घरुक) परंपरा

"क्षत्रिय वंश प्रदीप" में **धारुक (धरुक)** को कहार समुदाय का पाँचवाँ भेद बताया गया है तथा उसे पांडवों का वंशज कहा गया है।

इसी प्रकार 1911 ई. में लिखित **धरुका क्षत्रिय वंशावली** में भी घरुक अथवा धारुक को पांडववंशी क्षत्रिय बताया गया है।

यह तथ्य दर्शाता है कि समुदाय की पारंपरिक वंशावलियों में स्वयं को पांडववंशी क्षत्रिय मानने की परंपरा विद्यमान रही है।

---

7. ब्रिटिशकालीन अभिलेख

ब्रिटिश प्रशासन द्वारा तैयार अभिलेखों में **Gharuk** का उल्लेख निम्न प्रकार मिलता है—

(1) Census of India, 1931, Volume XII, Part I, पृष्ठ 377 — Gharuk को Kahar समुदाय के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया।

(2) Report of the Backward Classes Commission (1956), पृष्ठ 117 — यहाँ भी Gharuk का उल्लेख Kahar के रूप में मिलता है।

(3) Indian Franchise Committee Report (1932), पृष्ठ 323 — Kahar Group तथा उसके विभिन्न उपसमूहों में Gharuk का उल्लेख किया गया।

इन अभिलेखों से केवल यह स्पष्ट होता है कि औपनिवेशिक प्रशासन ने Gharuk को उस समय Kahar वर्ग में रखा था। यह वर्गीकरण प्रशासनिक था; इससे समुदाय की प्राचीन वंशपरंपरा का अंतिम निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता।

---

8. वर्तमान भौगोलिक वितरण

धौवचक गोत्र के कश्यप राजपूत वर्तमान में मुख्यतः हरियाणा तथा उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों में निवास करते हैं। समुदाय की परंपरा आज भी स्वयं को तक्षकवंशी एवं क्षत्रिय मानती है।

---

9. निष्कर्ष

उपलब्ध स्रोतों के तुलनात्मक अध्ययन से निम्न निष्कर्ष सामने आते हैं—

1. **धौवचक गोत्र की व्युत्पत्ति समुदाय की परंपरा के अनुसार संस्कृत "धानुष्क (धनुषक)" से मानी जाती है, जिसका अर्थ धनुर्धर या योद्धा है।** ([Wisdom Library][1])
2. **कश्यप राजपूत वंशावलियाँ इस गोत्र को तक्षकवंशी क्षत्रिय परंपरा से जोड़ती हैं।**
3. **समाज की परंपरा में कामधवचक को पृथ्वीराज चौहान की सेना का योद्धा माना गया है।**
4. **"क्षत्रिय वंश प्रदीप" तथा** 1911 **की धरुका वंशावली घरुक/धारुक को पांडववंशी क्षत्रिय परंपरा से जोड़ती हैं।**
5. **ब्रिटिशकालीन अभिलेख** Gharuk **को** Kahar **वर्ग में रखते हैं, किंतु यह प्रशासनिक वर्गीकरण था और इससे समुदाय की प्राचीन उत्पत्ति का अंतिम निर्णय नहीं किया जा सकता।**

अतः धौवचक गोत्र का इतिहास केवल सरकारी अभिलेखों के आधार पर नहीं, बल्कि भाषाई, पौराणिक, वंशावली एवं सामाजिक परंपराओं के समन्वित अध्ययन से ही समझा जा सकता है।

संदर्भ (References)

1. Monier-Williams Sanskrit Dictionary – **धानुष्क** (Dhānuṣka)। ([Wisdom Library][1])
2. Census of India, 1931, Vol. XII, Part I, p. 377.
3. Report of the Backward Classes Commission, Government of India, 1956, p. 117.
4. East India (Constitutional Reforms), Indian Franchise Committee Report, 1932, p. 323.
5. **क्षत्रिय वंश प्रदीप।**
6. **धरुका क्षत्रिय वंशावली** (1911)।
7. **कश्यप राजपूत समाज की प्रकाशित वंशावलियाँ।**

✍️ लेखक परिचय

सोनू धौचक कश्यप राजपूत (करण), हरियाणा
स्वतंत्र लेखक | शोधकर्ता | समाजसेवी

सोनू धौचक कश्यप राजपूत समाज के इतिहास, संस्कृति, वंशावली, सामाजिक गतिविधियों, युवा जागरूकता, शिक्षा, संगठनात्मक विकास एवं समसामयिक विषयों पर निरंतर अध्ययन, शोध एवं लेखन कार्य में सक्रिय हैं।
